श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रशासकीय, व्यक्तिगत एवं शैक्षिक समस्याओं का विष्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ऋतु बाला,
शोध निर्देशिका
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

विनोद रेलन,
शोधार्थी
टांटिया विश्वविद्यालय,श्रीगंगानगर

सरांश-

*प्रस्तुत शोधकार्य **श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रशासकीय, व्यक्तिगत एवं शैक्षिक समस्याओं का विष्लेषणात्मक अध्ययन** किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान के राजकीय एवं गैर राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की समस्याओं पर है। इस हेतु शोधकर्ता के द्वारा निर्मित ''अध्यापक समस्या प्रश्नावली'' और अध्यापक समस्या मापनी दो उपकरणों का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि राजकीय एवं गैर राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की समस्याओ का विश्लेषण किया है।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास की आधारशीला है यह मानव के जीवन को सार्थक बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ व उद्देश्य भावी नागरिकों को व्यक्तिगत महत्व आत्मगौरव एवं समाजोपयोगी वांछित क्षमताओं का विकास करके उनमें सामाजिकता की भावना को विकसित करना है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली के संचालन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान शिक्षा का हैं अच्छे शिक्षक के अभाव में किसी भी शिक्षा के स्तर को उन्नत बनाना अत्यन्त कठिन है। शिक्षक भी देश को उन्नत बनाने के लिए बच्चों को अच्छे नागरिक बनाने में प्रयत्नशील है। लेकिन इन शिक्षकों के कर्त्तव्य पालन में कई तरह की बाधाएं आती हैं। अतः ये कई तरह की विद्यालयी संसाधनों सम्बन्धी समस्याओं और प्रशासकीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं। जिनका समाधान करना अति आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की विभिन्न प्रशासकीय, व्यक्तिगत तथा शैक्षिक, समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथनः

प्रस्तुत शोध समस्या का कथन है श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रशासकीय, व्यक्तिगत, एवं शैक्षिक समस्याओं का विष्लेषणात्मक अध्ययन

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

१. **शैक्षिक समस्याएंः-** ये वे समस्याएं होती है जिनका एक अध्यापक को अपने शैक्षिक उत्तरदायित्व को निभाने के समय करना पड़ता है।

२. **प्रशासकीय समस्याएंः-** ये वे समस्याएं होती है जो एक अध्यापक के वेतन से, सह-कर्मचारियों के व्यवहार, प्रधानाचार्य के व्यवहार और बच्चों की समस्याओं के निवारण में उनके माता-पिता से सम्बन्धित होती है।

३. **व्यक्तिगत समस्याएंः-** ये वे समस्याएं होती हैं जो एक अध्यापक के पारिवारिक, मानसिक और उनकी आर्थिक स्थिति से होती है।

अध्ययन के उद्देश्य-

१. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकपनाएँ-

१. गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा राजकीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाओं की प्रशासकीय, व्यक्तिगत तथा शैक्षिक समस्याओं में अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श-

न्यादर्श की परिशुद्धता समूह सम्बन्धी हमारे ज्ञान एवं उस विधि पर निर्भर करती है। जिसमें न्यादर्श लिया गया है। प्रस्तुत शोध में २५ माध्यमिक विद्यालयों के २०० अध्यापकों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत शोध कार्य में राजकीय एवं गैर राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की समस्याओं के अध्ययन हेतु शोधकर्ता के द्वारा निर्मित ''अध्यापक समस्या प्रश्नावली'' और अध्यापक समस्या मापनी दो उपकरणों का उपयोग किया है, जिसमें एक शून्य परिकल्पना द्वारा परिणाम प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त किया गया है।

प्रदत्तों का विष्लेषण व विवेचन-

सारणी संख्या - १

क्र.सं.	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मध्य अन्तर	टी. मूल्य	सार्थकता स्तर (.०१ व .०५)
१	राजकीय शिक्षक	100	139.45	7.77	0.39	0.357	असार्थक
२.	गैर राज० शिक्षक	100	139.06	5.39			

व्याख्या- गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा राजकीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाओं की समस्या स्तर के प्रति अभिवृत्ति के माध्य में अन्तर ०.३९ है। दोनों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए इनके टी. मूल्य की परख की गई। टी. मूल्य ०.३५७ आया है। वह मूल्य .०१ व .०५ स्तरों पर असार्थक है। इसका अभिप्राय यह है कि दोनों गैर राजकीय और राजकीय अध्यापकों के विभिन्न समस्या स्तर में समानता प्रदर्शित होती है।

निष्कर्ष

गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापक, अध्यापिकाओं तथा राजकीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाओं की प्रशासकीय, व्यक्तिगत तथा शैक्षिक समस्याओं में अन्तर नहीं पाया जाता है।

उपयोगिता-

१. अध्यापकों की प्रशासकीय समस्याओं के निदान के लिए प्रशासन को अध्यापकों को उच्च वेतन तथा समय पर देना चाहिए। अध्यापको को स्वयं भी अपने वेतन से सन्तुष्ट होना चाहिए। जहां तक संभव हो सके अध्यापकों की प्रशासकीय समस्याओं का निदान कर उन्हें उचित सहयोग प्रदान करना चाहिए।

२. अन्तिम शैक्षिक निहितार्थ के रूप में अध्यापकों की व्यक्तिगत समस्याओं के निदान से है। अध्यापाकों को स्वयं तथा प्रशासन को भी इन समस्याओं निकारण के उपाये करने चाहिए। अध्यापकों को आत्मविश्वास, हतोत्साहित नहीं होना चाहिए, प्रशासन को भी अध्यापको को खुला वातावरण देना चाहिए। इस प्रकार अध्यापक सुविधाएं

समय-समय पर प्रदान करनी चाहिए। ताकि अध्यापक शारीरिक समस्याओं से रहित अपने कार्य को पूर्ण रूप से कर सकें।

भावी शोध हेतु सुझाव-

१. प्राथमिक, उच्च माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
२. प्राथमिक अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
३. राजकीय एवं गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
४. राजकीय एवं गैर राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
५. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में महिला अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

१. अग्रवाल, वाई. पी., स्टैटिक्ल मैथड्स, स्टरलिंग पब्लिशर्ज, नई दिल्ली-1995
२. ई बेल, आर. एल.,एसैसियल ऑफ एजुकेशनल मेजरमैन्ट, पैन्टिश हाल ऑफ इन्डिया प्रा. लि. मि. नई दिल्ली-1991
३. कपिल, एच. के.अनुसंधान विधियां, प्रसाद भार्गव आगरा-1989
४. कपिल, एच. के.सांख्यिकी के मूल तत्व, आईकन कम्पयूटर आगरा-2005
५. कौल, लोकेश शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशर्ज, नई दिल्ली-1998
६. कुमारी, प्रवीण "जिला सिरसा के राजकीय प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन" एम. एड. डिजर्टेशन- कु. युनि.-1995